अथहोलीज्ञान अधरकीकला

भाग तीसरा देखो

हरगोपालकृत

सम्मत १९६२ माघ महीणा कृष्णा पक्षमें°

अथ होली भेट अधर दुर्गाजी को
दोहा
जान तेरे से जक्त को। सक्त कला सही जान
जानत है जग जान कू। रक्त सत्ता कही हान
होली। ठेक। जग जन्नी जोत जग जानी।
जानी कला तेरी नर जनने। जन से जान सदा
राखो। जान निकाली है दुष्टन को। जन के जा
न रहे राखो। जंगल का जस जागत जीता।
जिकर जंग का रस चाखो। जिदना जन की
जान जनानी। जाच जान कर चल साखो।
तोड़। जो जान जन की निंन्दा करते। डर डार
करो डर हानी। २। हानी जान जान को की
जे। डर के तस्कर कू खाजा। ज्ञान महो डर हि
रदें जन के। तोलो क सांची आजा। सांचे से
सांचा करदानी। ताल कंठ से कर साजा।
साज सजै या के साजे सें। जन का जान
सही काजा। तोड़। काज करे संतन के
तेने। लख घट कू ठेर जादानी। ३। दानी है
गुरा ज्ञान को दाता। हाथ धरें जन के सिर
कर। सांचा ज्ञान जचावो हिरदें। डरो कंठ
दानी थिर कर। थिर कर ज्ञान हिये के सा
खी। अटक काल से लख तिर कर। तिर कर
जन कू देख दूर सें। टेरा जंग कला धिर क
र। तोड़। ज्ञान कलासी खानी गुरा की। खुस
होके ज्ञान की ठानी। ३। ठानी है लख और जु
गत सें। जुगत जान नही होती। होती जान

सहोजगा दाता। दाता जानले ईसोती। ध्या
न धरा हरवकत नहीं कोना। क्योना सबुके
खोती। गुरा करनीसें ज्ञान करारा। ईस घट
अन्दर है जोती। तोड़। हरगोपाल कहे लख
देखो। येता अधार छन्द गुरा ज्ञानी।४।२।
दोहा
देखन तुरु को आगये। क्योडर के रेकाला
तन काला को कामको। करे अंतका ख्याल
होलो। ठक। लखरस्ता अधर निकाला।
कान्हाने लटलट काके लटका। लटका नयानि
को मोहे। श्री कृष्णा को अलके रासो। घरनसेष
तकहालाहे। तोड़। अलक के षसेषके से देखो।
जाकू काल देखके हाला।१। टंग देखनर
औतारोका। सेषलजतहै घरनी धार।
कालोका लटकला कालका। देसतकत
है करनी कर। तोड़। चित्तको डाटडटे
... । तेरा सिंद्ध होयन रख्याला।२।
देखो अधर कला के कारन। करदेसकर
छिटकाई। केसं नागनी देखकालने। का
लाने दहसतखाई। तोड़। लेखलेखनी लिखें
अलखका। गुरादेख कष्णा का आला।३
चंचल नैन हरीके जानो। लागत खंजर
सेनी के। करती लहर लकीर हिरदें। लाल
लागत काले जीके। तोड़। हरगोपाल कहे
ये अधर करारी। घर चल देखके चाला।४।२

दोहा

रससागरका चाखोये। कितना है जलतरंग
डर डागरकूं काटकै। करो सहीर लतरंग
होलूलो। ठेका। जल जाच ज्ञान सागरका।
केरंगत सागरके जलको। कै गुराका सा
गर होता। अंध लगाकर कहो अगाड़ो।
तस्कर हसकरके रोता। तोड़। रोता धना
कालसे डरके। कहो कितना जंगल जागरका॥ २
जलको जाचकर कोई दाना। अग्यानो
कूं जाच नहीं। जाचै कैसे गुराका हेटा।
अधार तालको आच नहीं। तोड। सिकर ठि
करकर देखो ज्ञानो। जैसे ध्यान नारगागर
का। २। जाच जानको कालकै रंगा। करे तो
ज्ञानी होकाला। काला क्या है कार जगत
को। डालकालके गलताला। तोड। लाख
लखैया लखे लखनकूं। लखलाख लखो
नागरका। ३। कैसें गागर है नागरको।
ज्ञानसे ज्ञान करो ज्ञानो। देखो कैसो
कारो अरघको। अंध करो गे धार ठानो
तोड़। हर गोपाल अधर धरनीसें। चले
चाल अधर नागरका। ४। ३। दोहा
धीतरीकूं देखकर। खंडसकलकुललोग
नारीकूं नर तकरहे। तकैतो उन्हधरसोग
होली। ठेका

धर ध्यान अधार गोसाले

स्यालकोट दुलरगलगलको।करलकाटोया
काटोकाट।हारकन्हैया गरा देखने।खाने
कोना देखोचाट।तोड़।खान खनैयाकेघर
खाना।तेराहोगा आंज अघांले।१।राखो
यादहटजो दुरजन।उन्हका नाकोइकरेअ
कोन।येतो सुनोसहो दुनोयासे।ज्ञानस
होघरकेगुरा तीन।तोड।सातदीनादिनके
दिनजानो।गुनोगुनंका टूकड़ा खाले।२
रामकैसदुनोमासेन्यारे।हसंकर गोता
खायरहा।रमकदिन एसाहोगा जानो।को
लडटाडट आयरहा॥ इसजानेजगजाने
है॥लखकोट लोकके हस्ते।३।
कहनेका क्याकरो ज्ञानसें।हाथकाल
का गालकोंहा।कोसा लेकर तीनोदिना
सें।गोसालेका हालकोंहा।तोड़।हरयोप
लकहें सुन जाने।चटसालेरा केके गाले।
४।४। दोहा

हालतंकाचकहें हालको।सुनो लगाकेकान
कानदियेसांचोसुनो।ध्यानकराधरध्यान
होला।ठक।चलआयेअघरसंगके।
संगसातके जतने होंगे।तेरेज्ञानकेलाग
है।जानकानकेरजानोनकालो।आठ[illegible]
[illegible]घरजागहे।तोड।जागगासोजानोहमो।
तेरकटजायतांग तंगके।१।

ज्ञानसरोइ घटको दादो... करोदादद
खलको दाल। हीरा दाल चनेको खाती
येर करक्योस्याद हाल। तोड़। खातदाल
हीरहर दोनो। ठगदेखोतौन रंगके। २।
रंगतकाघरदेख रंगीले। देखसहेगुरा
के ज्ञानी। दानकर ज्ञानीघर खाके।
उसीकार कैसे हानी। तोड़। ज्ञानदानहात
के धौरे। करदेखोदान ठगके। ३।
जोजाने गुनज्ञानकोताने। तानसहे सोते
चादर। चादरहै सतगुरकी कीनी। गुनी
राखतेकर आदर। तोड़। हरगोपालकहै
यधरहे। लख अधर ज्ञाननही जगके। ४। ५।

दोहा

नजरकसोटी ज्ञानघर। जानतहै जगकोय
दुख जानतको ज्ञानके। लख ज्ञानसे दोय
होतनठेक। लखदेखो अधर कसोटी।
लखसोलखो याहीजगजानी। कालकाहानी
कूजाने। ज्ञान कलाकारलोकी कालो। उर
कतदेख सहे ताने। तोड़। जोजाने हे अंधा
घरका। गडूर ज्ञानकी चोटी। १। ठहराये
सनहे ठहरेगी। लाख ज्ञानकर ले कोई।
नहीकाइकी होती देखो। होती हेताघर
सोई। तोड़। सोतो र [redacted] जनकू देखे। उतो
नायकांत्तसे छोटी। २।

गुरा औगन —— का बतानाताहै। जाच
करोतोहो ज्ञानी। देखा लखा कहो
कितना है। इसका ज्ञानकरो ज्ञानी। तोड़।
नहीं करोगे सर दिखो हो। तेरी जानकारी
में तोटो। ३। छोटे सी तखदार सरीके
करे जगतके काज कतला। नजर कसोटी
से देखा है। उन्हको कहते राजकला। तोड़।
हणापालकहै ये तीन साखको। संगर राखो
ज्ञान चनोटो। ४। ६। दोहा।

ज्ञानचनोटो जानको। जान ज्ञानको तान
तनो तनाइ तन रहो। लखेतो लखोया जान
होलो। ठेक। एक छोड़ अधरको छोड़ो।
घरबर ज्ञानी दुरानीको। एसें कहे जगत
के लोग। लोगलुगाई देखे सारे। तालको
नोका सारोग। रोग रहे न तनको तंसा।
दिलको चाल रहानासोग। सोग करे ना
ज्ञानीहो के। सतसंगलका राखे जोग। तोड़।
जोना जाने आठकलाई। गुरा छोन ताल
करो नेडो। १। ज्ञान ताल ना रहतो घरको।
कोइ कहे लख जानो घर। इसकायाको
खोज ज्ञानको। जोनर जाने ज्ञानो घर।
तालकु ताल जगतके देखे। देखलो यसर
हानो घर। हानी करन जगतके लागे। लाग

केरकोइ छानो घर। तोड। छानकेरे गुन
ज्ञानको ज्ञानो। लखगाडो नायउचेड़ो। २
गड्डा गडाइकू खोदेगे। जान ज्ञानसें कान
करें। कान कैरतो कदीना टोटा। कोटैरो
टा ज्ञान करें। जचेज्ञानको दुनीयासा
री। सार सरीका जानकरें। जानकरेंता
ज्ञानी दाता। दातदइ घर तानकरें। तोड़।
जोरहजागी कसरजरासी। तेरीतोड़ नाक
नसेड़ो। ३। नाककानकाटगेतेरे। आ
खतेरी कोढु जान। जान नीकातोहे
सतगुरसें। तेरेजानसेजाननदान। का
लनदनीकू नहीजाने। जानेजोगकला
केतान। तान गुसेकाकासाकला। ला
लसहीकरदेखा ज्ञान। तोड। तुरगोपालकों
घटदेखो। चढरही ज्ञानंकोखेड़ो। ४।७

दोहा

अष्टकलाखेड़ोचढ़ी। अधरतेजहुइ धार
धारसही घटकोहुइ। चलेगुनीईकेसार
होली। ठेक। लखअधार ज्ञानकोतेजो।
तेरीतजोतेजकलासें। नरकोतेजोनार
करें। नारकरातीतेराघरको। शारजा
तको कारकरें। करेंकेरपाकरकेदखे।
देखलेरसिंगारकरें। सजरसजनोसंग

साजनके। अघर अकासी मारकरै। तोड।
कालचेतकी चंदी चांदनी। डुटरोई नार
सनेजी। १ ईसकारनकू कोइ जानेगा। ज्ञान
करया दाना सर। सार जगतके जान अगत
की। जानेगा सो जाना सर। जानकानकू गे
रीतेने। ठेर ज्ञानका तानासर। ज्ञान अघर
का अरथ लणाके। अटलज्ञानसे आनासर। तो।
अटलसंककोइ जोगी हेग्या। काहा सोय
साजसंगसेजी। २।

तेरा नरनारी घरजोगीके। उसके सोइ संग
सहे। ठीकजाननर हाथकलाइ। होती
देखो तंग सही। कालअचानककी चि
डयाकू। घर लीया कर जंग सही। कतर २
चिडयाकूं खाइ। कुतर कुतर का रंगासही।
तोड। कतरेगा कुतरा होजगा। घर ढूं
ज्ञानका लेजी। ३। अंध अंध का रंगे खुलासा।
तानकरारी कमगुरु ज्ञान। जानकूलं की

जाने तनके। तनके जोगका घर
[redacted] सैतान। करे चाकरी नौकर होजा।
कारज जेठसे होगा जान। कहनकरारी का लेलखा।
ठीक यादको हिरदे ठान। तोड।
हरगोपाल कहे डरडरके। गुनी जांन राज अंग
रेजी। ४। ८॥

दोहा

हरनका घरकोन है। कोन घटाई कान
कोन चटा सिरकालके। कोनजंगके जान
होती ठका चसा अधर ज्ञानकी नगरी।
ज्ञानअधरकी नगरी देखो। होना ज्ञानतुले
दूना। ऐसा होयहि यकासाचा। रहतानाय
कदीसूना। सुन्न अठासीसे लेकरके। देख
दाहानीका जूंना। कासन धोके धरें अंग
के। ज्ञानकाहानीसें छूना। तोड।
धोके हाथलगाना होगा। सिरलांद टोकरी
सगरी।२। आठटोकरी धरी ज्ञानकी
कोन तीन सही जानी। रूटी चटकी एक
नहीहै। देखसाचके कही जानी। कहनस
न्नये सांचाजानी। हाथअठासी गही ज्ञानी।
अधरजोगनगरी लखदेखो। कसरसातसें
रही ज्ञानी। तोड़। सीसटोकरी तनका धोड़ा।
लखठेर असलकी डगरी।२। असलकादे
खो देस ठेरके। कैसा चोकसही चौसर।
चौसर और सत्तरंज ज्ञानकी। रंगखिला एक
घर ओसर। घरकी यार सारकूं देखो। ता
लकरंतीका तौसर। सरकी तौसर तोसकसां
ची। कलाकालकी है खोसर। तोड़।
अस्तानी नर देखो सांचे। घर जोगंकालका
ठगरी।३। देखकदर कारण कालीया। कोन
२नगके राजा। राजकरें जोगीके चेले।

जोगजंगसेंकरसाजा। कालनगरकीचर
खीएसी। जनकौन्यायकरैंलाजा। लाज
केरगासत्तगुरजनकी। तनकोराखघरो
आजा। तोड़। हरगोलालकहेतूहोजातकड़॥
घटधरीज्ञांनकीगगरी।४।८॥ दोहा।
घटअन्दरगगरीधरी। ठसोज्ञानकीजान
खरचूगातोडानही। थोडानाकुछज्ञान
होली। ठेक। लखअधर अंकासीआसन।
अधरज्ञानकीधीकूदेखो। अधरचलैंधर
नीसेंचाल। चालअधरका ज्ञानीहोगा।
अधरचालकेचिकनेगाल। आसक होजन
धीकूदेखें। अधरकंठकान्यारीताल। तास
अधरकीनजरकरारी। धीकाधीगगुनीका
हाल। तोड़। हालगुनीका ज्ञानीजानें। को
ईअरलजोगकांदासन। १।
एसोचालअगरीयाघरकी। धीजागजानी
हेचंगी। चंगीचलेचालकचलके। गुनी
ज्ञानकेघरसंगी। संगीहोकेकहेंज्ञानकू।
धीकेसात्तकरीतंगी। तंगीसेंगुरादेखज्ञान
का। होगातोहिरदेजंगी। तोड़। जंगकला
कूज्ञानीदेखें। नुगराकाहेयंगानासन। २।
नासदुष्टकाअधरकलासें। देखोतोहो
ठीकसही। सहीजानधीजानजगतकी।

जानेगुंनकी लोकसही। सहो देख अकु
स चढो कू। नजर हालसें तोक सही। सही
सरलएक धीकोन्यारी। तालकंठकी सोक
सहो। तोड। सोकोसाकी कहें सदासें। तर
टूटे जंगसिंगासन। ३। जंगसिंगासन टूटे गुन
को। धोका होना रांडसही। देखदिखाले
देसकायाकू। तीनखूटले हांडसही। धोका
धोरधरयानाहे। धोरधरें कोई सांडसहो।
सांडोछानोरहताजगसें। अधरकलासें
छांडसही। तोड। हरगोलाल कहें लखदेखो।
चढगाते छुन्द अकासन। ४। १०॥ दोहा।
असन्केता आसनजानीये। कहूं तुकेकरगोर
कहोसहोकरजानले। तानकहो कासोर
होलो। ठेक। धरठेरो अधर आसके।
आसरकर आसनराखो। आसकरेंता
आसिकहो। आसासियानेराखो हरको।
लंकाकाकुल नासिकहो। तोड। अंगसरो
दासादसादनी। साजनके रंग रासके। २
दोनोजोका एककरलोना। रसारारखाध्या
नसहो। धरकालखा और जगतका। ठे
ककियाकल्यानसहो। तोड। चुगरचुग
लएकहाथको। सिरहाथडे सियानासके। २।
डरकुलनास किया लंकाका। सतकोसोता

येदलजानुयोकाहोता।जानोनहीआग्या
नीने।तोड़।क्याजानेगुरा अंगरोगके।नहो
छोडूरूखखासके।३।घासजलीलेरूखतंक
के।छोडानहीकिनारेकू।सेखीसदारेंसुना
तेरी।छोडूदीकेगुरासारेकू।तोड।हरगो
लालकहेकोइजोगीजाने।लखदेखोअंक
दासके।४।२१। दोहा।
आन्नकीसुन्दरमती।कहूंसुनोचितलाय
कहीसहोकरजाचीये।कालकदीनाखाय
लीलो।ठेक।चलचालअधरघरआया।
आन्नकीसुनकलादंतत।हिरलालतजाये
है।दरसनकारनषटदरसनकू।आसनत्या
गकेआयेहे।तोड।आसनलायअधरघर
नीसें।डरगयेजोगगुनछाया।२।एंकर
इन्द्रानीदिक रानीसे।नंगचरनोसेंधाये।
श्रीकृष्णाकोलीलादेखी।सकलसहीउ
गुनगाये।तोड।तनचंदनहारचढायेग
लके।लखअंक्षतसीसलगाया।२।
हिरदेचरनहरीके राखो।कालकंसकाले
नदलाल।डरेरहोधरनीधरजानो।अधर
कलाकादेखोजाल।तोड।दुष्टकंसकूगा
रतकीना।संतोकाराखेंलईकाया।३।
देखसहीकरराखरहोकू।येजानीका

घ्यानकैहं। धराकहीदेखतकूदेखें। जान
नहीघरजानकहै। तोड़। हरगोलालकहै
सुनज्ञानी। सिरअधर ज्ञानकीछाया। ४।१२।
दोहा।
रेती रेतें रतको। रितंसहीकर रेत
रेतमें रितता नहीं। रित रतनतन हेत
होले। ठका धरी रेतु अधरकी रेती।
कदर रेतकी जोनर जाने। जान सहीरेतीकी
जान। रेतरलाई रलगई रेती। रेतघनारत
नोकी खान। तोड। रज रेतीकी असलका
हासे। लखचाल असलकी लेती। २।
रेतरात रेती कर दीनी। रेतसही जिस्के
घरका। हेगाकाज उसीका साचा। रेती
रेतरतन हरकी। तोड। नौरतनोंकी खान
काहाले सुनज्ञानकदरके हेती। १।
रेती चाल असलकी जाची। जाचरतीरले
की चाल। सेर ठिकाना जचे रेतका। रस
रंगतका देखो ताल। तोड। उहीतमल रतनों
की खानी। कोई जाने रंग रगमेंती। ३।
रंगरंग प्यार रंगसेतीका। सेत सिधर घोना
थसही। रंगमिया के कारन रागा। कुल
दलहरके साथसही। तोड। हरगोपालक
हेडरत्यार खडो है। गुनी अंधर ज्ञानकी खे
ती। ४। १३।

ख्याल

हरि निराकार निराधार चार कर त्रेताल के करता।
सच्चिदानंद आनंद काल के हर ख्याल के करता।
है आदि अनादि अनाद अगाद कृष्ण अकाल के
करता॥
रज चन्द्र को अंजन कर का हो अधर हाल के कर
ता। हो ला। टेक। चलें चाल अधर नंद लाला।
चलें उछल के चाल कृष्ण जी। चलत सरत गु
ण के दाता। नारी कहें नगर सारे की। सूरत
देख तुरत आता। तोड़। आते कू कुछ देर लगे
ना। गुरा देख सखी संग चाला। १।
कर से कर कू कसा कृष्ण ने संग सखी के
चोल करें। गोल के चौरी से चल देखे। ला
ल करारी गोल करें। तोड़। रंग रंग के ढंग दे
खले। कोई गोरा लगे कोई काला। २॥
रंग सही रंगत के न्यारे। हर रंग इक सार
सही। जो जाने एक सार रंग को। कोंर रंगी
ली तार सही। तोड़। हांसी चोल करें हस कर
कें। सुख रंग कृष्ण का आला। ३। रंग ढंग
कू नर जन देखे। जगत सही हर कू खासा।
आते होगे रंग कन्हाई। करें सखी सारी
आसा। तोड़। हर गोपाल कहें सुन ज्ञानी।
यो तो रंगत चाल कसाला। ४। २४।

दोहा

कारन ठाली कार का। करो सही सुधार

अच्छालागत जतकू। सुखसारो संसार
होली। ठेक। गुनो अधर अंगसुखदाई।
सुखदरसें औलादघनीहो। एसें कहे मत जा
गी। जागजंग जागीकरताला। अंगसरीकेघर
लागो। तोड़। अंगकारकू जंगीजाने। डटहरसें
सुरत लगाई।१।
हरसे ध्यान किसेका होगा। जानकरैं जानी
होजाय। कदर दानकोई जानेघरकू। नूरा
जानहरासो जाय। तोड़। नयनकलासें एसा
जगको। कुछदीखेंकालकलाई।२।
कालकलाईका घरदेखो। छूटजाय सारे
धंदे। घरकारनके रहन ज्ञानकी। जचेनही
गुराके अंदे। तोड़। जचेतो जाने तस्कर कैसा।
डटज्ञान तानकर आई।३।
सुरत जागकी अधरकलाहे। जानजातसे हे
नाता। असरकसाई और सदनाकू। देख
सहीगुराके ग्याता। तोड़। हरगोपाल कहे
लखदेखो। लडनेकू ज्ञानलडाई।४।२५।

दोहा

लगनलगाई कद लगे। लगेतो क्योंकरजान
जानकरीगुराजानके। हुयाजानसें ज्ञान
होली। ठेक। सुनीलडते अधरलडाई।
अधरलडाईकाघर देखो। जानकलासें हो

जाती। होके जान तेरे ज्ञानोसें। करे ज्ञान की गुणगाती। तोड। ज्ञानी जागकरे जागन की। जग जानें जान जगाई।२।
लगन लगाईका घर देखा। हस्त सुनाते जान तेरी। जान जानानोका घर छोडो। करे ज्ञान की कान तेरी। तोड। सरत लगन और अंत लगनको। कर जांने संत चतुराई।२।
धोया चलो कर ईस दुनीयासें। लडका लडकीना तेरे। तेरा ज्ञान हियेका होगा। सुरगानसानोकू घेरे। तोड। गेरें ज्ञानसुरग के अन्दर। गुरा देगा कष्ट हटाई।३।
ताकत जान सही गुराकरनो। करनोके तो गुराकी खान। खान अकेलो जानसुरग से। सत सरोदा देखो तान। तोड। हयो पाल कहे सुन ज्ञानो। घर एक असल सुखदाई।४।१६। दोहा।
सजन सकारे जायगे। नयन लगेगे रोन कर तारएसी कीजोये। सकारक दोनाहोन हेस्तो। ठेक। चलू अधर संग साजनके। निजका देस छोड चले साजन। अकल लडई हरानकलो। क्या जानू क्या हुया साजसें।

छोड़संगसतानकली।तोड़।सुरतअधर
कूनायतजेगो।डरजागकाजकाजन
के।२ जोसोतेकूतजेकलंकी।का
लसहीकाखाजाहे।येदुरसोससही
जानोजी।चाहेजोगचाहेराजाहे।
तोड़।दुष्ट अनाडीछातीठाके।येतो
नायढंगराजनके।२। घरकारनका
राजकाहाहे।कहोकहनकूहालजरा।
जराहालकूकोईना जाने।चलेंअधरके
चालजरा।तोड़।अंगसजनकूरंगना
देखें।सजनोंकूसोचताजनके।३।
अंगरंगीलाढंगतीनका।सोचअंगका
ढंगसही।जोतूछोड़ेंसुरततालकू।
होताडोलेंतंगसही।तोड़।हरगोपाल
सुनज्ञानी।कहूंअधरछन्दगाजनके।
४।२७। ।दोहा।
सादनकेसुखसादकी।कहूंकाहानीआज
जोज्ञानीचित्तकरसुने।सहीतालगुणसाज
होलो।ठेका।सादनकीअधरकलाहे।
कलाअधरसादनकीदेखी।तीनगुना
करदेखलीया।ज्ञानीजनउल्लकोदे
खेंगे।देखसहीकरलेखलीया।तोड़।

देखादेखा नाघर का ज्ञानी। गुनील
डुनेको आजमलाहै। १। ढंगसादके
सादलखैगे। खचरेकूतो ज्ञाननही।
अस्र अकलक नकलोदीखें। चारधरो
से जाननही। तोड। छेकू जाचघराघ
र अन्दर। घर ठोरे रंग रलाहै। २।
रंगरलाकीकोन जातहे। जाचकरोगुन
ज्ञान सही। कारकाहानीकाना नाता।
आद अंतका दानसही। तोड। दानी
होघर जान सकेगा। नही जाने जान
जलाहै। ३। साखगइले साद नेजाना।
कैसातुरुकोहे गुन ज्ञान। सत्तका कहन
किया नहीकान्न। जाती रहरकासी
जान। तोड। हरगोपाल जानकालागू।
लखघरकू चाल चलाहै। ४। १८।

दोहा

लखोयातो लखतारेहा। लगोयातो रेहोलाग
ठगीयातो ठगता राहा। जगोयातो रेहोजाग
होलो ठेक। धन लेगये कोन ढंगसें।
लखोयाने आखोसें देखा। अधरकला
सें ध्यान लगा। ध्यान हरातो ज्ञान
नहीहै। तनकायाकू खानलगा।

देख न जरसे कूछ न होहोगा। दोरबै है घर
जान लगा। असलोतो अखत्यार न हो है।
तगरा रगरा घर आन लगा। तोड़। लखीया।
ख्याल लखे का करता। न हो छोड़े सात संग
सें।२।
लगीया लगे लाग कर लागू। लगा राह लग
ने की ठोड। ठोड़ छोड़ न हो गाते ज्ञानी।
चाह आठो का हो जा तोड़। धन जसेकू के
सें देखू। गुनी ना जाते चोकी छोड़। लगन
लुगाई का जो होगा। धन को कदीना धरते
जोड़। तोड़। लाग लाखसें कितना होता।
लख ज्ञानी एक रंगसें।२।
ठगीया ठगकू ठगे जानके। ठगे तो ठगीया है
केसें। ठगन की ये चाल का हासें। चले
तो चलीया है केसें। छल की चाल चले
क्यर ज्ञानी। तके तो तकीया है केसें। टाल
करंतो कदीना टलता। टले तो टलीया है
केसें। तोड़। ख्याल तजो ये धन है झूटा।
गुनी हटते नाय जंगसें।३। जगीया जाग
राहा है घर का। चोर काहा चोरी करता।
जगारख जगदाता ज्ञानी। न हो किसीसें
अड़ता। जागन को है डगर सीरा ने। धना
कूचोर कासा धरता। जाग जगीया के सिर
जेरा। जान सहीधनसें सरता। तोड़।

हरगोपालकहैंयेछन्द अधरका। धनसो
तालाय अंगसें।४।२५। दोहा।

चोरसहोहैकौनसा। इन्हचारोंकेसाथ
ठोकगुनीतूजाचले। रंगठंगकर हाथ
होलो ठेक। करो संकयाकोनसकसको।
करचारोंको जाचनजरसें। कस रंगत
जोहै ज्ञानो। अंतकरोना जोजनगाते।
अंततालकाहोदानो। तोड़। चालच
लनका चारचरनसें। लखंचार आख
खटरसको।१।
धनका चोर अंतकालोंसें। संतगुनी
घरकू जाचे। सिरचारो एक बोरल
खादे। जगतगुनीकागुन नाचे। तोड़।
जोतू असलो अधरकलाको। खटचक्र
चोर देखसको।२।
होगा चोरकाहानोदरका। इतनातुझ
कूतंतदिया। जानकानसें हरकेदेखो।
चोर करषका अंतदिया। तोड़। ~~अंत~~
तंत अंतका आगे तेरे। गुनतोंनताल
लेजसको।३।
घरघोडकाचोर काहासें। कहोसाद

सैं ज्ञानीधर। कैसे जाने जान चोरकू।
लखैा आरसैं तानीधर। तोड़। हरगोलाल
कहैं सुन ज्ञानी। धन खाया कांलसैं खसको।
।४।२०। दोहा